Interactions between G,Gw and Gn

Pranav Shekhar
Assistant Professor
Department of Economics

Notes for PG second semester

Edit with WPS Office

Scanned with CamScanner

Gt, Gw और Gn में आपसी तालमेल

एक गतिशील निरंतर वृद्धि के लिए Gt, Gw और Gn का आपस में एक-दूसरे के बराबर होना अनिवार्य है।

Dynamic Economic growth = Gt = Gw = Gn

परंतु छुरीधार संतुलन (Knifeedge Equilibrium) कभी-कभी ही अर्थव्यवस्था में हो सकता है, सामान्य तौर पर Gt या तो Gw से बड़ा होता है या Gw से छोटा होता है। अगर

Scanned with CamScanner

G > Gw होगा तब निवेश की दर बचत की दर से ज्यादा वृद्धि करेगी और आय बढ़ेगी। अगर G < Gw होगा तो बचत की दर निवेश की दर से ज्यादा वृद्धि करेगी और आय कम होगी। अगर Gw > Gn होगा तो Economy में Secular Stagnation (ठहराव) होगा। जब Gw > Gn होगा तो C > Cr होगा और अर्थव्यवस्था में पूंजीगत वस्तुओं की वृद्धि होगी एवं श्रमिकों की वृद्धि होगी। पूंजीगत वस्तुओं की अधिकता एवं श्रमिकों की कमी का अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा क्योंकि जितना पूंजीगत उत्पादन हो रहा है उनकी मांग नहीं हो पा रही है। इस कारण मशीनें, Capital machinery स्थिर रहेंगी। निवेश, उत्पादित वस्तुएँ रोजगार एवं आय सभी कम होंगी एवं अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आ जाएगी। इसके विपरीत यदि Gw < Gn तो Gw, G से भी कम होगी। इसका अर्थ यह होगा कि अर्थव्यवस्था में वास्तविक वृद्धि एवं प्राकृतिक वृद्धि वांछित वृद्धि दर से अधिक है। और इसी के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में मुद्रा-स्फीति की स्थिति होगी। जब Gw < Gn तो C < Cr, यह स्थिति तब उत्पन्न होगी जब पूंजीगत वस्तुओं की कमी होगी एवं श्रमिकों की अवस्था उत्तम होगी। लाभ का स्तर निवेश के स्तर से अधिक होगा एवं अर्थव्यवस्था में स्फीतिकारक विचारधारा

Scanned with CamScanner

काम करेगी। इससे मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होगी।

निष्कर्ष :-

इसका तात्पर्य यह है कि अर्थव्यवस्था में G, Gw और Gn की बराबरी मुश्किल से ही संभव है। सामान्य तौर पर अर्थव्यवस्था में इसका असंतुलन बना रहता है एवं अर्थव्यवस्था मुद्रा स्फीति एवं मंदी के बीच संघर्ष करते रहती है। गतिशील वृद्धि में यह असंतुलन Harrod के एक मान्यता से आता है जिनमें उसने उत्पादन फलन एवं Saving income ratio and Capital output ratio को fixe Proportion में माना है। जिसके चलते उनके अनुपात में परिवर्तन नहीं आता और अर्थव्यवस्था में असंतुलन बना रहता है। निम्न परिस्थितियों को दो रेखाचित्र द्वारा दर्शाया गया है।

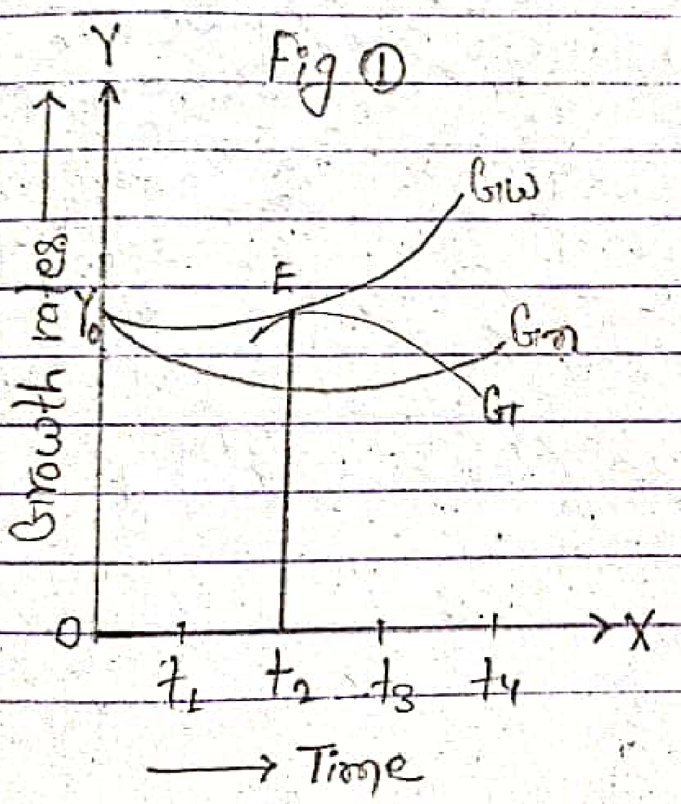

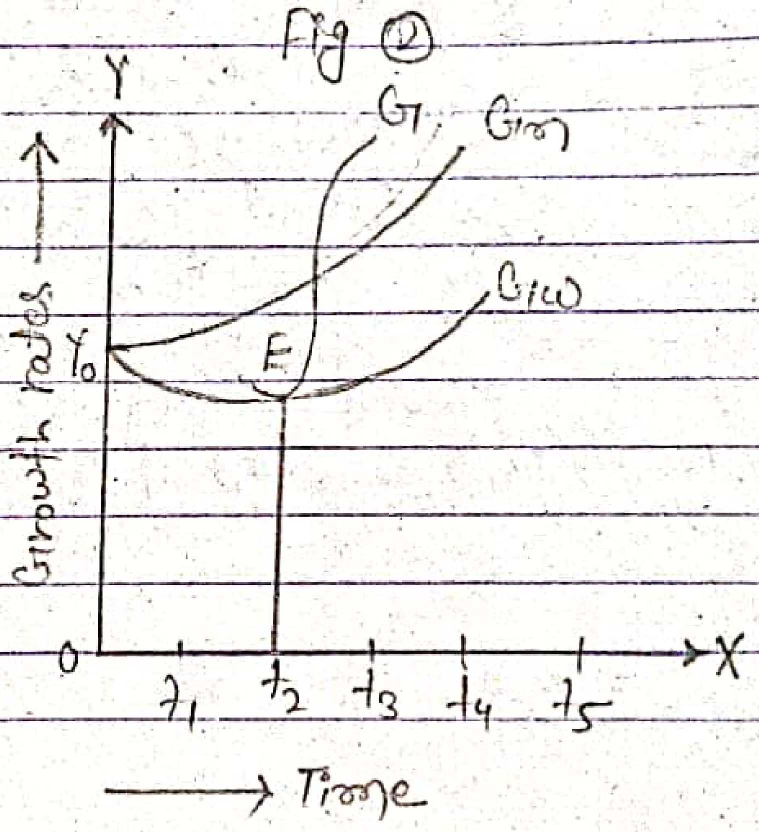

Scanned with CamScanner

दिए गए चित्र में X-axis पर समय तथा Y-axis पर वृद्धि दर को दर्शाया गया है। यहाँ हम यह देखते हैं कि अर्थव्यवस्था बिन्दु E पर संतुलन प्राप्त कर रहा है। यहाँ fig① और fig② में दो अवस्थाओं को दर्शाया गया है। fig① में Gw का वक्र Gn के वक्र से ऊँचा है अर्थात Gw > Gn वहीं अर्थव्यवस्था में G, Gw एवं Gn से कम है जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में अपस्फीति / दीर्घकालीन गतिहीनता / Secular Stagnation की स्थिति बनी रहेगी। यदि इसे नहीं रोका गया तो अर्थव्यवस्था में मंदी भी आ सकती है, क्योंकि वास्तविक पूंजी का भंडार, वांछित पूंजी के भंडार से बड़ा है अर्थात C > Cr। इसका तात्पर्य यह है कि पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन हो रहा है परंतु माँग नहीं। इसके विपरीत fig② में Gw का वक्र Gn के वक्र से नीचे है अर्थात Gw < Gn। ऐसी परिस्थिति में वास्तविक वृद्धि (G) वांछित वृद्धि / पूर्ण रोजगार वृद्धि से ज्यादा होगी और अर्थव्यवस्था मुद्रा स्फीति का अनुभव करेगी। ऐसी परिस्थिति में वास्तविक पूंजी वांछित पूंजी से कम होगी और वस्तुओं की माँग अधिक होगी जिसके कारण पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन कम होगा एवं अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति आएगी।

Scanned with CamScanner